दादा भगवान परिवार का
दिसम्बर २०२०
शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

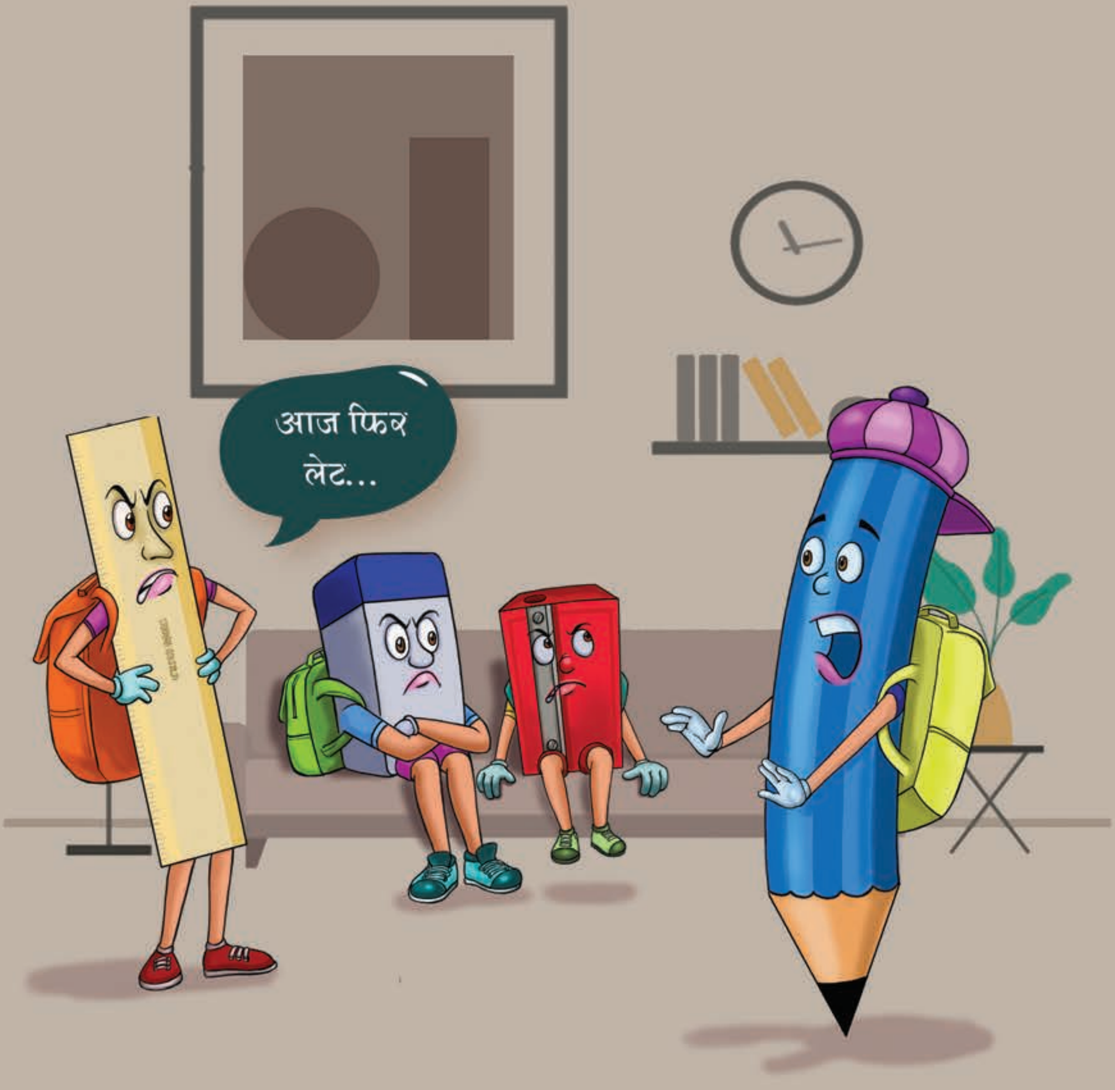

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

बात-बात में दूसरों की भूल निकालना हमारे लिए कितना आसान हो गया है न? सचमुच देखें तो हमें इसमें मज़ा आता है। लेकिन तब हमें ख्याल नहीं रहता कि दूसरों की भूल निकालते समय हम भी भूल ही कर रहे हैं।

तो चलो, इस अंक में हम दूसरों की भूलों से होने वाले नुकसान को समझें। और वैसी भूलें फिर से नहीं होने दें। इस अंक में ऐसी बहुत सी चाबियाँ मिलेंगी और साथ ही साथ हिम्मत भी मिलेगी, जो हमें दोबारा यह भूल करने से रोकेगी।

-डिम्पल मेहता

'किसी की भूल नहीं निकालते'

वर्ष : ८ अंक : ८
अखंड क्रमांक : १३
दिसम्बर २०२०

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

प्रश्नकर्ता : क्यों किसी की भूल नहीं निकालनी चाहिए?

दादाश्री : भूल निकालने से क्या फायदा? इमोशनल (भावुक) इंसान ही भूल निकालता है। किसी को भूल निकालने का अधिकार नहीं है। कोई दोस्त है, यदि हम उसकी भूल निकालते हैं तो दोस्ती टूट जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब मैं उसकी भूल निकालता हूँ तो उसे दुःख क्यों होता है?

दादाश्री : भूल निकालेंगे तो दुःख तो होगा ही। वह तो उसका अपमान करने समान है। यह तो आपको उसके ऊपर बैर है, एक तरह का।

दादाश्री : अर्थात् पूरे घर में प्रेम ही होना चाहिए। घर में किसी की भूल नहीं निकालनी चाहिए। भूलचूक हो जाए तो प्रेम की ख़ातिर जाने देना चाहिए। प्रेम सब कुछ निभा लेता है।

प्रश्नकर्ता : कई लोगों को भूल निकालने की आदत होती है, तो क्या करें?

दादाश्री : प्रेम में भूल कभी नहीं निकालते। प्रेम में भूल नहीं दिखती है। हम भूल देखते हैं वह हमारी ही भूल है। हमारे कषाय ही सामने वाले को भूल वाला दिखाते हैं। और यह टॉप मोस्ट नालायकी है। ऐसा नहीं होना चाहिए। किसी की भूल निकालनी भी नहीं चाहिए और यदि दिखाई दें तो पश्चाताप करना चाहिए। अरेरे, ऐसी नालायकी हो गई मुझसे।

यह तो नई ही बात है!

हम भूल निकालते हैं इसलिए सामने वाला भी मौके का इंतज़ार करता है कि मैं कब इनकी भूल निकालूँ। इसे फैमिली नहीं कहते।

किसी की भूल निकालने के पीछे खराब आशय होते हैं। दूसरों से अपनी मनमानी करवानी है इसलिए जानबूझकर भूल निकालते हैं।

जो भूल सामने वाला
पहले से जानता है वह
भूल कभी नहीं
निकालनी चाहिए।

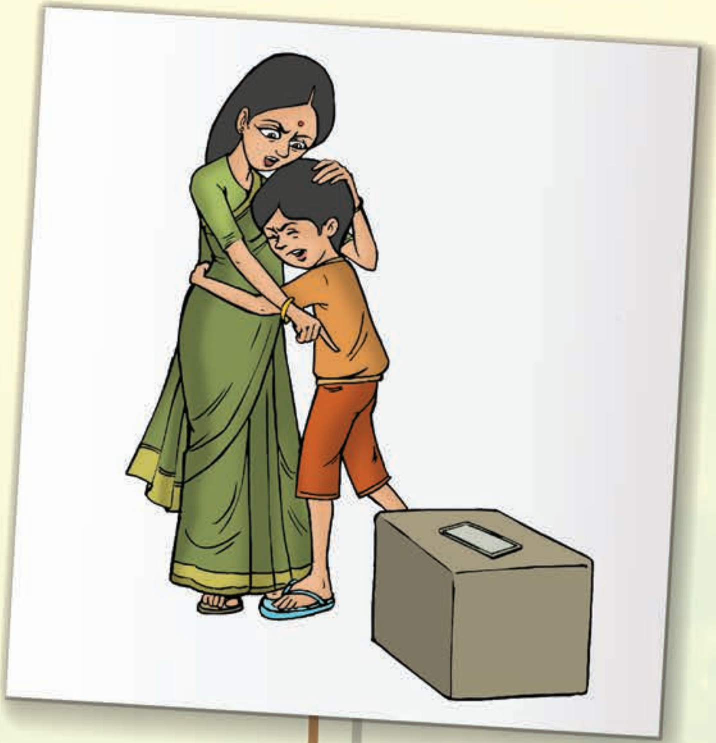

वस्तु की भूल
निकाल सकते हैं
लेकिन व्यक्ति की
भूल कभी नहीं
निकालनी चाहिए।

"यह सब आपने किस तरह हासिल किया डैडी? आई एम स्योर कि आपके पास कोई सीक्रेट चाबी होगी।" शेल्फ पर रखी हुई ढेर सारी ट्रॉफियों को देखकर अपने मन में हमेशा होने वाला सवाल, उस दिन फुरसत के समय में आरुष ने अपने पापा मि. सौमिल से पूछ ही लिया।

"हाँ बेटा। १९८० की यह बात है। तब मैं कॉलेज में था।" मिस्टर सौमिल ने बात शुरू की, "मेरे दोस्त ऋग्वेद, ध्रुवी और मैं कॉलेज की कैन्टीन में एक छोटा सा सेलीब्रेशन करने के लिए इकट्ठा हुए थे क्योंकि उस दिन हमारे कॉलेज के पहले साल की अंतिम परीक्षा थी।"

"तो वेकेशन में तुम लोगों का क्या प्लान है?" ऋग्वेद ने उत्साहपूर्वक पूछा।

"कुछ नहीं," हमने धीरे से जवाब दिया।

"तो साथ में मिलकर कुछ करना है?" उसकी आँखों में एक अलग ही चमक थी।

"जैसे कि?" मैंने पूछा।

"मेरे पास एक आइडिया है। वसई स्टेशन के पास एक वीरान जगह है। मुझे कई बार लगता है कि इस जगह का सदुपयोग होना चाहिए।"

मैंने कहा, "लेकिन वह तो सूखा कचरा फेंकने की जगह है।"

"हाँ, लेकिन यदि सूखे कचरे का कुछ दूसरा उपयोग करेंगे तो वह जगह खाली हो जाएगी और वहाँ बग़ीचे जैसा कुछ बना सकते हैं।" ऋग्वेद ने अपना विचार बताया। हम सभी को उसका विचार अच्छा लगा।

प्रोजेक्ट ड्रीमलेंड

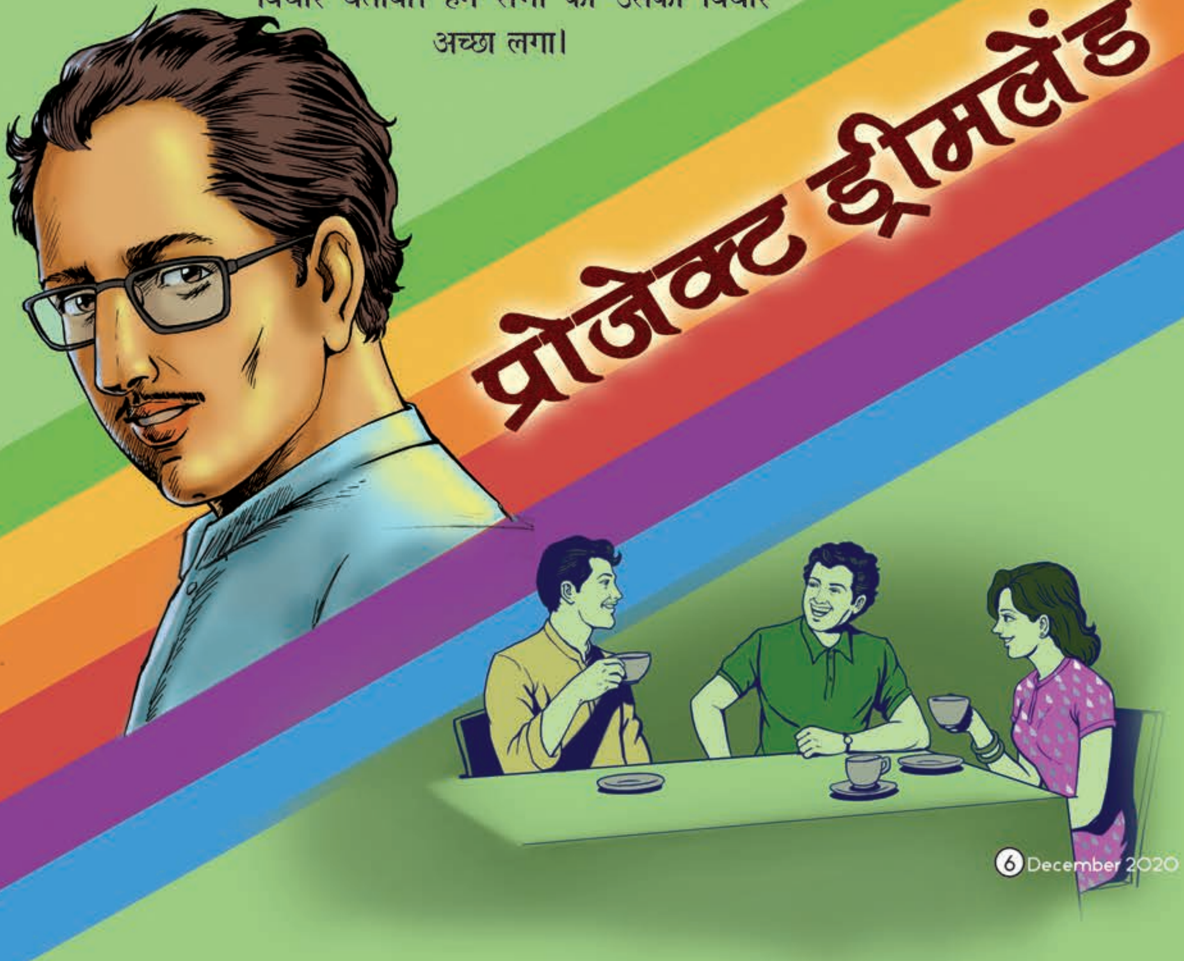

“विचार अच्छा है। लेकिन उसमें सरकार की मंजूरी चाहिए,” ध्रुवी बोली। यह बात सुनकर हमारे चेहरे लटक गए।

“हम सरकार को इस आइडिया के बारे में बताने के लिए एक पत्र लिखकर भेजें? कोशिश करने में क्या जाता है?” ऋग्वेद ने उत्साह से कहा।

और हम सब तैयार हो गए। उसी दिन ऋग्वेद ने सरकारी ऑफिस में एक पत्र लिखा। और एक हफ्ते में ही ‘हाँ’ का जवाब आ गया। हम खुश हो गए। लेकिन उसमें साथ ही साथ यह भी लिखा था कि इस प्रोजेक्ट की संपूर्ण ज़िम्मेदारी आपकी होगी। सरकार के पास इस प्रोजेक्ट के लिए कोई बजट नहीं है।

हमारे लिए यह बहुत बड़ा चैलेंज था। लेकिन हमने स्वीकार कर लिया।

हमने प्लानिंग करना शुरू किया। हमारे सपने के घोड़े तेज़ी से दौड़ने लगे। हमारे सपनों की दुनिया में झूला, फिसल पट्टी, रंग बिरंगे फूल और ऐसा बहुत कुछ था और इसीलिए तो हमने अपने प्रोजेक्ट का नाम रखा - प्रोजेक्ट ड्रीमलैंड।

“लेकिन ज़ीरो बजट में यह सब किस तरह संभव होगा?” ध्रुवी के शब्दों ने हमें सपनों की दुनिया से बाहर निकालकर वास्तविकता दिखलाई।

“हम कचरे में से खाद बनाएँगे और उस खाद को बेचकर जो पैसे मिलेंगे उसमें से यह सब करेंगे। मैं उसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ।” मैंने बहुत विश्वास से कहा।

उसके बाद हमने म्युनिसिपैलिटी की मदद से ज़मीन साफ करवाई। ज़मीन के उपजाऊपन का पता लगाने के लिए ध्रुवी के साथ जमीन का नमूना खेती-बाडी लेबोरेट्री में भेजा। लेकिन दूसरे दिन ध्रूवी उसका रिपोर्ट लाना भूल गई।

यह सुनकर मेरी कमान छटक गई। मुझे ध्रुवी के गैरज़िम्मेदाराना वर्तन पर गुस्सा आया। मैंने ध्रुवी को बहुत डाँटा, “हाऊ केन यु बी सो इरिस्पॉन्सिबल?! तू

कब अपने सपनों की दुनिया से बाहर आएगी? हमेशा खोई हुई रहती है!"

ऋग्वेद ने मुझे शांत किया। "डोंट वरी। मेरे नेबर विष्णु चाचा उसी एरिया में रहते हैं। वे हमारे लिए रिपोर्ट ले आएँगे। मैं उनसे कह देता हूँ।"

दो घंटे में हमारे हाथ में ज़मीन का रिपोर्ट आ गया और वह सकारात्मक था। ऐसा लगा कि जैसे चित्र तैयार हो गया था, अब तो बस उसमें रंग भरना बाकी था। हमने काम बाँट लिया। ध्रुवी और मुझे प्लॉट पर लगाने वाले पौधे पसंद करने का काम सौंपा गया। ऐसा लग रहा था जैसे एक महीने में हमारा सपना हमारी नज़र के सामने सच हो जाएगा।

दूसरे हफ्ते नर्सरी में ऑर्डर किए हुए पौधे डिलीवर हुए।

"यह क्या है? यह पौधा तो लिस्ट में नहीं था," एक अलग प्रकार के पौधे को देखकर ऋग्वेद को आश्चर्य हुआ।

"आई नो, लेकिन नर्सरी वाली बहन ने कहा कि यह पौधा बहुत तेज़ी से उगता है और इसकी कीमत भी कम है। इसलिए मैंने खरीद लिया।" रिस्की डिसीजन लेने का साहस करने की अपनी क्षमता पर ध्रुवी को गर्व महसूस हुआ।

ध्रुवी ने पौधे लगवाए। ऋग्वेद और मैंने दूसरे छोटे-बड़े काम पूरे किए। सभी मुख्य काम समय पर पूरे हो गए। उस रात ऋग्वेद ने सभी कामों का लिस्ट चेक किया और कहा कि, "चलो, हम सभी एक हफ्ता

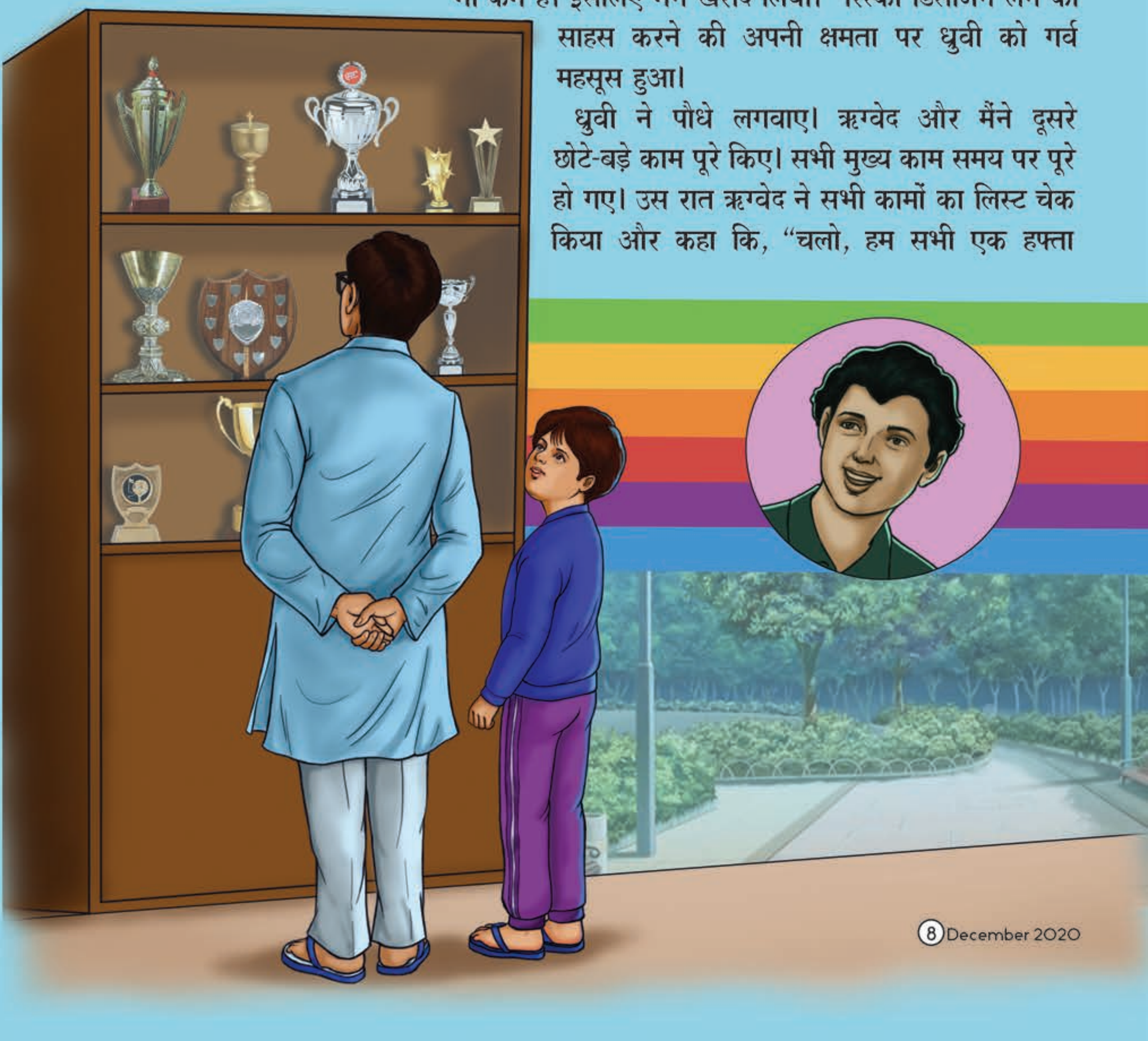

आराम करते हैं और अपनी मेहनत का फल आने का इंतज़ार करते हैं।"

सातवें दिन हम बहुत उत्साहपूर्वक अपनी स्वप्न सृष्टि देखने गए।

"यह क्या??" ड्रीमलैंड की हालत देखकर हमें जो आघात लगा उसकी कोई सीमा नहीं थी। सारा क्षेत्र विचित्र पौधों से भरा हुआ था। हमें कुछ समझ में नहीं आया। 'ऐसा कैसे हुआ?' जाँच करने पर पता चला कि ध्रुवी के लगाए हुए अलग प्रकार के पौधे की यह करामत थी।

"ध्रुवी, देखा तेरे प्रयोग का परिणाम? पूरी जानकारी नहीं हो तो प्रयोग की क्या ज़रूरत है? अब हमारे पास इतना समय भी नहीं है कि फिर से कुछ करें।" मेरे गुस्से की सीमा नहीं थी। ध्रुवी बहुत घबरा गई। उसकी आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे।

"फ्रेंडस्, कुछ बिगड़ा नहीं है," ऋग्वेद ने हमें शांत किया, "मैंने पौधों की जड़ देखी, वे बहुत गहरी नहीं हैं। थोड़ा खींचने से उखड़ जाएगी। नज़दीक में ही मज़दूर कॉलोनी है। उन्हें थोड़े पैसे देकर ज़मीन साफ करवा सकते हैं। मैं देखकर आता हूँ।"

और ऋग्वेद का कहना सही साबित हुआ।

"अर्थात्, आपका प्रोजेक्ट ड्रीमलैंड तैयार हो गया?" आरुष ने आतुरता से पूछा।

नहीं, इतनी आसानी से नहीं। याद है, मैंने कचरे में से खाद बनाने की ज़िम्मेदारी ली थी?

हमने सोचा था कि इस खाद में से जो नफ़ा (पैसा) मिलेगा उसमें से सब खर्च निकल जाएगा। लेकिन खाद बनाने का मेरा प्रयत्न असफल रहा। जब ध्रुवी और ऋग्वेद को इस बात का पता चला तब उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा। हर बार की तरह ऋग्वेद ने बात का सॉल्यूशन ढूँढ़ निकाला, "मेरे घर पर जो बहन काम करती हैं उनके पति किसान हैं और वे वसई में ही रहते हैं। मैं उन्हें फोन करता हूँ।"

किसान भाई ने आकर परिस्थिती का अवलोकन किया और हमें एक उपाय बताया। हमने उनके कहे अनुसार किया और खाद ठीक से बन गई।

मुझे हमेशा लगता था कि ऋग्वेद के पास कोई मैजिकल चाबी है जिससे उसे सभी प्रॉब्लम के सॉल्यूशन मिल जाते हैं। लेकिन उस दिन पहली बार मैंने एक बात नोटिस की कि सभी परिस्थिती में मैं दूसरों की भूल निकालने में व्यस्त रहता हूँ जबकि ऋग्वेद उसका उपाय ढूँढ़ने में व्यस्त रहता है। क्या यही उसकी मैजिकल चाबी होगी?!

थोड़े दिन में प्रोजेक्ट ड्रीमलैंड तैयार हो गया। कत्थई सफेद रंग का रास्ता, हरी मखमली घास और रंग बिरंगी फूलों से सजी हुई ज़मीन देखकर हमारा सपना सच हुआ।

साल के अंत में हमें 'प्रोजेक्ट ड्रीमलैंड' के लिए सरकार की ओर से अवॉर्ड मिला। हमारे काम की प्रसंशा हुई। लेकिन मन ही मन मैंने इस सभी का श्रेय ऋग्वेद को दिया। ऋग्वेद की प्रॉब्लम सॉल्व करने की कला के बिना यह प्रोजेक्ट कभी भी पूरा नहीं होता।

मि. सौमिल थोड़े रुके। आरुष ध्यान से डैडी की बातें सुन रहा था।

"आरुष," अब मि. सौमिल का स्वर थोड़ा धीमा हुआ, "सामने वाले की भूलें निकालने में हम अपनी शक्तियाँ खर्च कर देते हैं। यदि उन शक्तियों का उपयोग प्रॉब्लम का सॉल्यूशन ढूँढ़ने में करें तो सुदंर परिणाम आता है। यही है इन सभी ट्रॉफियों के पीछे की सीक्रेट चाबी।"

एक गहरी साँस लेकर आरुष ने डैडी से मिली हुई समझ दिल में समा ली।

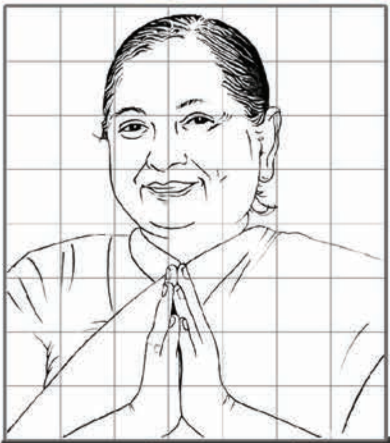

HAPPY Birthday

Niru माँ

ऊपर के चित्र को देखकर नीचे के खंड में वैसे ही जोड़ते हुए स्केच पूरा करो।

नीरू माँ Quiz

हमारे प्यारे नीरू माँ के बारे में आप कितना जानते हैं?
आप खुद ही चेक करके देख लो इस **QUIZ** के **Answer** देकर...

१. नीरू माँ की जन्म तारीख - महीना - वर्ष ?

(अ) ०८-०७-१९६८ (ब) ०२-१२-१९४४ (स) १२-२-१९५८

२. नीरू माँ का असली नाम क्या था?

(अ) नीरू (ब) नीरूपमा (स) नीरंजना

३. नीरू माँ जब गाना गाते तब उन्हें अपनी आवाज़ किसके जैसी लगती थी?

(अ) आशा भोंसल (ब) नरगीस (स) लता मंगेशकर

४. नीरू माँ स्कूल जाने से पहले कौन से भगवान की प्रार्थना करते थे?

(अ) हनुमान जी (ब) दादा भगवान (स) कृष्ण भगवान

५. नीरू माँ ने क्या पढ़ाई किए थे?

(अ) इंजीनियर (ब) कॉलेज (स) एम. डी. (गायनेक)

६. नीरू माँ दादाश्री से पहली बार किस शहर में मिले थे?

(अ) औरंगाबाद (ब) बड़ौदा (स) मुंबई

७. नीरू माँ के जीवन का ध्येय क्या था?

(अ) गरीबों की सेवा करना (ब) डॉ. बनकर बहुत कमाना (स) जगत् कल्याण, मोक्ष

८. नीरू माँ ने जब ज्ञान प्राप्त किया तब उनकी उम्र कितनी थी?

(अ) १८ वष (ब) २३ वर्ष (स) २५ वर्ष

विष

राजा देवधर्म के दो पुत्र थे। बड़ा राजवीर और छोटा यशवीर। राजा और रानी बहुत प्रेम से दोनों बच्चों का पालन-पोषण करते थे।
समय बीतने के साथ बड़े बेटे राजवीर के मन में एक विचार घर कर गया।
पिताश्री और माताश्री यशवीर को मुझसे ज्यादा प्यार करते हैं।
शाबाश मेरे बेटे! कितना सुंदर चित्र बनाया है तूने तो!
राजवीर को छोटे भाई के प्रति इतना द्वेष बढ़ गया कि छोटे भाई की हर एक क्रिया में उसे भूल दिखती।
एक दिन भोजन के समय यशवीर से थोड़ा सा खाना फैल गया,
वाह, मेरा छोटा भाई बड़ा तो हो गया है लेकिन अभी भी खाना खाना नहीं सीखा है।

बड़े भाई के दिन रात के व्यंग्य से परेशान, यशवीर की कमान छटक गई।
बस बड़े भैय्या, अपनी सलाह अपने पास रखो। मुझे शांति से जीने दो।
और इस तरह दोनों भाईयों के बीच एक दरार पड़ गई। दस साल बीत गए।
समय आ गया है कि पिताश्री अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करें।
यदि वे हमेशा की तरह पक्षपात करके इस पद के लिए यशवीर को ज्यादा योग्य समझेंगे तो?
और उसके मन में घमासान मच गया।
राजवीर ने एक योजना बनाई। वह राजवैद्य के पास गया।
भीमसेन जी, यदि आप मेरा काम करोगे तो मैं आपको रातोरात श्रीमंत बना दूँगा।
क्या काम है राजकुमार?
मैं अपने छोटे भाई की मृत्यु चाहता हूँ। यदि आप मुझे थोड़ा विष दोगे तो मैं आपको पूरी जिंदगी भर खत्म न हो इतना धन दूँगा।

कुँवर, यदि राजा को पता चलेगा तो हम दोनों को कैद में डाल देंगे। लेकिन मेरे पास एक उपाय है।
भीमसेन जी अपने कमरे में जाकर एक चूर्ण लेकर आए।
यह चूर्ण रोज़ थोड़ा-थोड़ा यशवीर के भोजन में मिला दें। यह चूर्ण धीरे-धीरे यशवीर के शरीर को खत्म कर देगा और मृत्यु स्वाभाविक लगेगी।
और हाँ, इस बात का खास ध्यान रखें कि किसी को आप पर शंका न हो, इसलिए यशवीर और राजा-रानी के साथ प्रेमभरा व्यवहार रखें। गलती से भी उनकी भूल न निकालें।
भीमसेन जी के कहे अनुसार राजवीर अपने भाई के साथ प्रेम से रहने लगा। भाई की छोटी-बड़ी भूलें अनदेखी करता गया और उसके उल्टे वर्तन को सहन कर लेता।
राजवीर के बदले हुए वर्तन से यशवीर में भी बदलाव आया। और अपने बड़े भाई के प्रति आदर होने लगा।

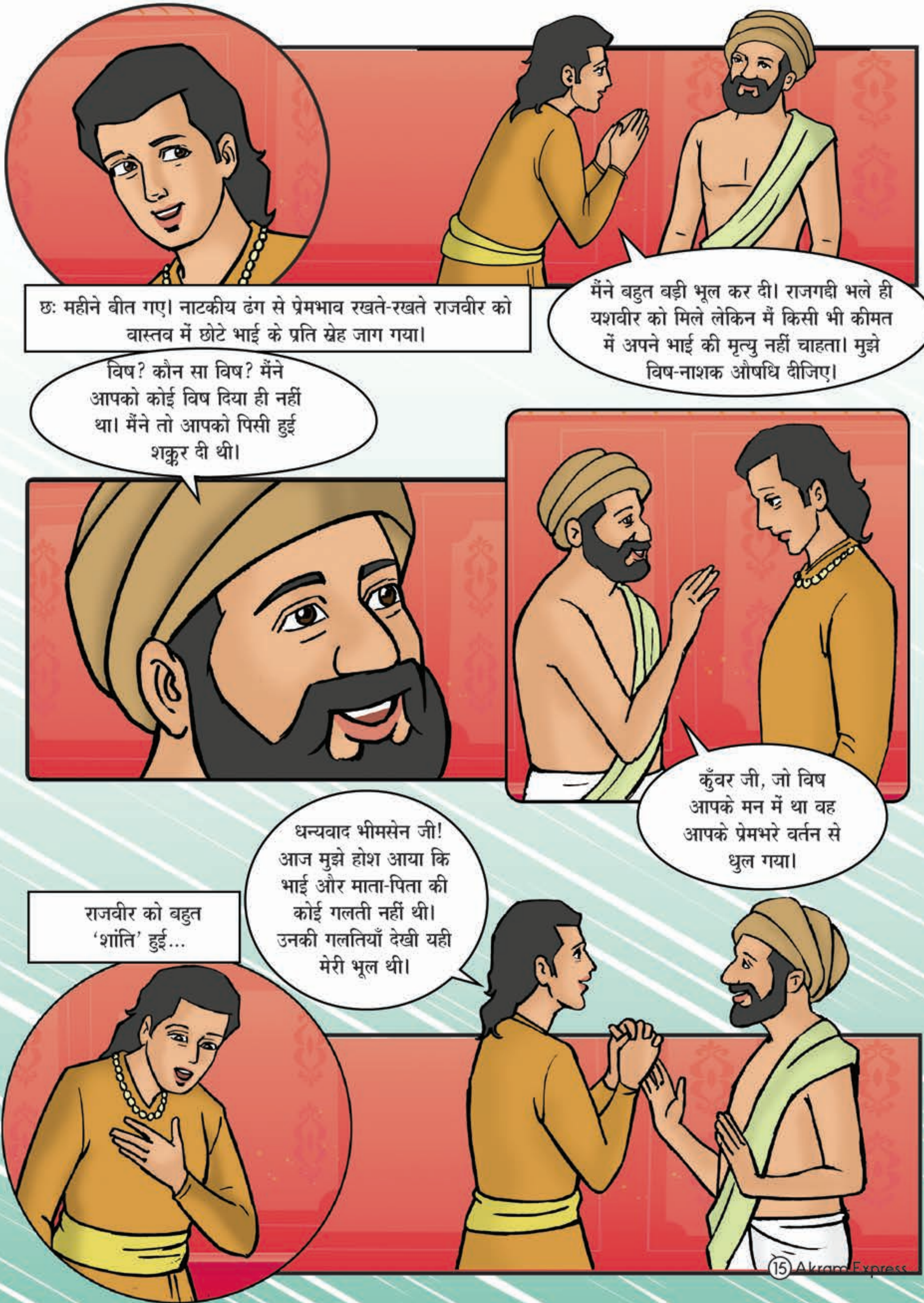

छः महीने बीत गए। नाटकीय ढंग से प्रेमभाव रखते-रखते राजवीर को वास्तव में छोटे भाई के प्रति स्नेह जाग गया।
मैंने बहुत बड़ी भूल कर दी। राजगद्दी भले ही यशवीर को मिले लेकिन मैं किसी भी कीमत में अपने भाई की मृत्यु नहीं चाहता। मुझे विष-नाशक औषधि दीजिए।
विष? कौन सा विष? मैंने आपको कोई विष दिया ही नहीं था। मैंने तो आपको पिसी हुई शक्कर दी थी।
कुँवर जी, जो विष आपके मन में था वह आपके प्रेमभरे बर्तन से धुल गया।
राजवीर को बहुत 'शांति' हुई...
धन्यवाद भीमसेन जी! आज मुझे होश आया कि भाई और माता-पिता की कोई गलती नहीं थी। उनकी गलतियाँ देखी यही मेरी भूल थी।

चलो खेलें...

CROSSWORD PUZZLE

PIZZA

PEPPERONI

N	O	P	E	D	E	L	I	V	E	R	Y
B	A	N	P	O	W	E	D	C	H	S	O
A	R	F	L	O	U	R	B	N	U	A	L
Y	P	E	P	P	E	R	O	N	I	U	F
O	A	H	D	O	N	E	H	O	M	C	W
F	H	C	F	C	H	P	E	P	P	E	R
G	U	T	E	N	S	I	L	D	O	V	E
O	N	M	A	R	H	Z	B	U	P	W	G
L	E	F	O	R	C	Z	F	C	B	E	N
F	M	E	T	O	M	A	T	O	H	I	D
C	O	K	N	D	O	P	E	C	Z	U	X
X	B	S	F	C	I	N	M	A	H	E	J

FLOUR

MENU

SAUCE

CHEF

PEPPER

DELIVERY

TOMATO

UTENSIL

मीठी यादें

नीरू माँ के साथ महात्मा बद्री-केदारनाथ की यात्रा पर गए थे। सभी महात्मा केदारनाथ पहुँचे तब नीरू माँ को बहुत बुखार था। नीरू माँ की डोली सबसे पहले वहाँ पहुँच गई थी। जो ब्रह्मचारी भाई मैनेजमेंट में थे, वे सभी को धीरे-धीरे रूम अलॉट कर रहे थे। उन्हें तब इतनी सूझ नहीं पड़ी कि पहले नीरू माँ को रूम दे देना चाहिए।

एक तो केदारनाथ की हाइट, उस पर बुखार, फिर भी नीरू माँ बाहर डोली में शांति से बैठी रहीं। नीरू माँ को देखकर ही लग रहा था कि वे बीमार हैं। फिर भी वे वैसे ही बैठी रहीं। दो मिनट... पाँच मिनट... सात मिनट हो गई... नीरू माँ ने कुछ नहीं कहा। फिर उन्होंने धीरे से उन भाई से कहा, "हमारा रूम ज़रा बता दो न।"

जब नीरू माँ ने कहा तब उन ब्रह्मचारी भाई को ख्याल आया कि पहले नीरू माँ को रूम बता देना था। तब उन ब्रह्मचारी भाई को लगा कि ऐसी तो हमारी कितनी ही भूलें होती होंगी! लेकिन ज्ञानी कभी भूल नहीं निकालते। खुद एडजस्टमेन्ट ले लेते हैं। कितने लघुत्तम भाव में रहते हैं ज्ञानी...!

अदानी एक्सपोर्ट कंपनी के एक कर्मचारी की वजह से कंपनी को बीस करोड़ का नुकसान उठाना पड़ा। इस वजह से कर्मचारी ने इस्तीफा देकर नौकरी छोड़ने की अर्ज़ी की। जब गौतम अदानी को इस बात का पता चला तब उन्होंने उस कर्मचारी का इस्तीफा फाड़ डाला और उससे कहा कि "मुझे पता है कि अब यह भूल फिर से नहीं होगी। यह भूल एक सीख भी है। नुकसान हमारी कंपनी ने उठाया तो सीख का फायदा दूसरा कोई क्यों उठाए?"

आज वही कर्मचारी कंपनी का जनरल मैनेजर है। कहा जाता है कि उनके द्वारा हुए नुकसान से अनेक गुना ज्यादा फायदा उन्होंने कंपनी को करवा दिया है।

ऐसी अद्‌भुत दृष्टि है गुजरात के जाने-माने और प्रिय उद्योगपति श्री गौतम अदानी की! उन्होंने कर्मचारी की भूल नहीं निकाली। इतना ही नहीं बल्कि उसे काम करने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

अदानी पावर कंपनी के सी. ई. ओ. विनीत जैन कहते हैं कि ऐसे एक-दो नहीं बल्कि कई उदाहरण कंपनी के कर्मचारियों ने अनुभव किए हैं।

अपना अनुभव शेयर करते हुए उन्होंने कहा कि "हम महाराष्ट्र के गोदिंया ज़िले में एक थर्मल पावर प्लांट बना रहे थे। इंजीनियरिंग टीम की एक गलत गिनती की वजह से कूलिंग वाटर पाइप ११ मि.मी. के बदले ९ मि.मी. का बन गया। तीन ही महीने में सारे पाइप फट गए। जाँच करने पर जब गलती पता चली तब पाइप बदलने की कीमत १५ करोड़ रुपये आँकी गई। जब मैंने अदानी साहब से यह बात कही तब उन्होंने पूछा, "तो हमें क्या करना चाहिए?"

संकोच करते हुए मैंने कहा, "लंबे समय की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए पाइप बदल देना चाहिए" अदानी साहब ने तुरंत कहा, "तो किसका इंतज़ार कर रहे हो, जाओ बदलवा दो।"

जब मैंने अपने आप को इस भूल के लिए ज़िम्मेदार माना तब अदानी साहब तुरंत बोल पड़े, "एक पावर प्लांट में हज़ारों जटिल चीज़ों का उपयोग होता है। इंसान से भूल हो सकती है न!"

विनीत जैन ने कहा कि किसी दूसरी कंपनी में ऐसी घटना हुई होती तो कितने ही आरोप लगा दिए होते। लेकिन गौतम भाई ने हम पर कोई आरोप नहीं लगाया।

इस तरह सामने वाले की भूलों को निभाकर श्री गौतम अदानी ने अपने कर्मचारियों का दिल जीत लिया।

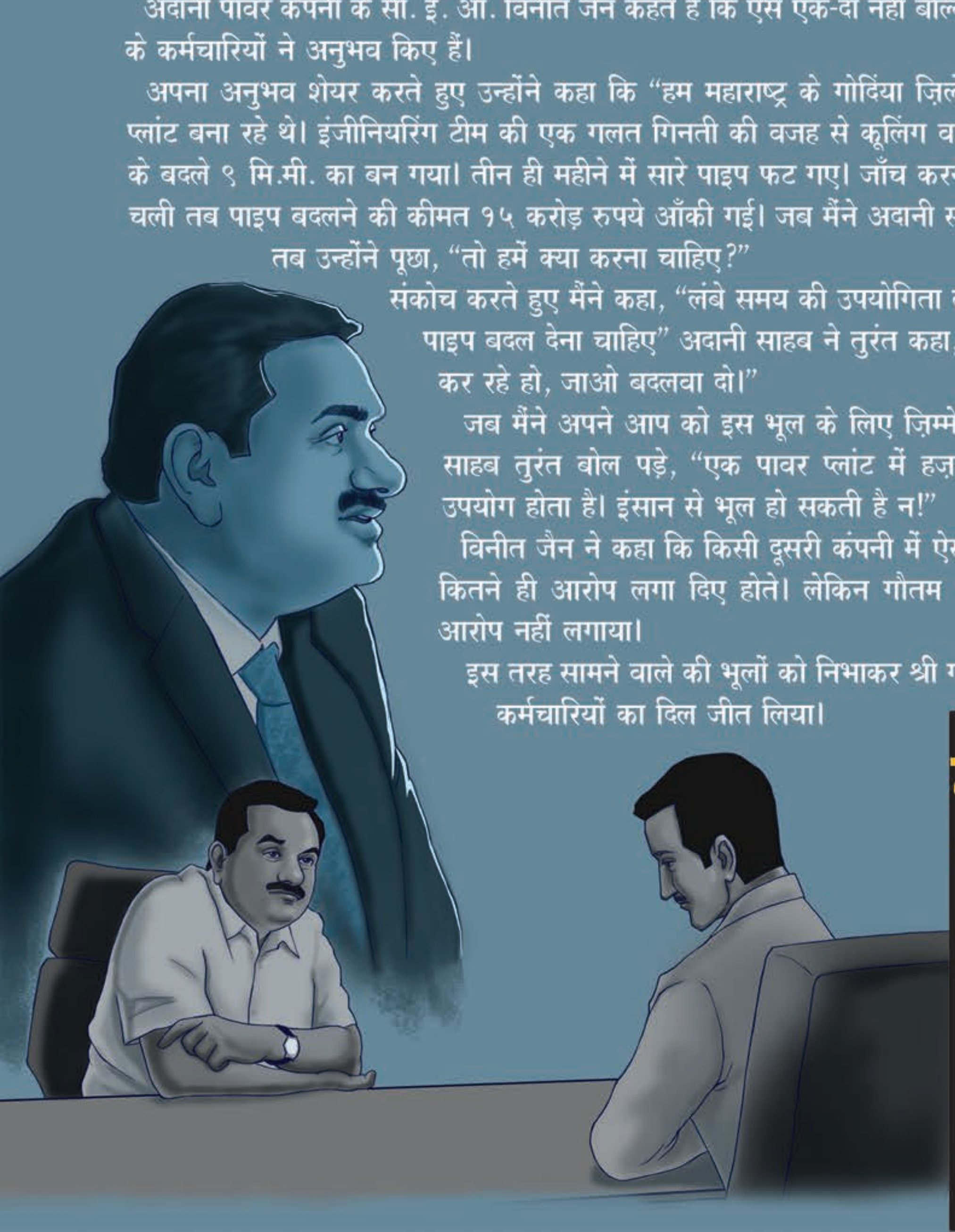

जीवंत उदाहरण

Online LMHT Fusion की झलक

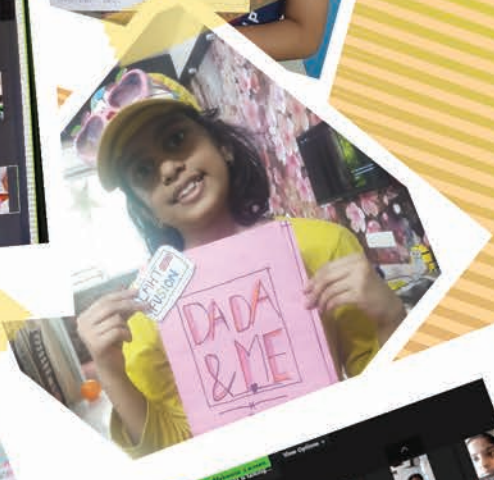

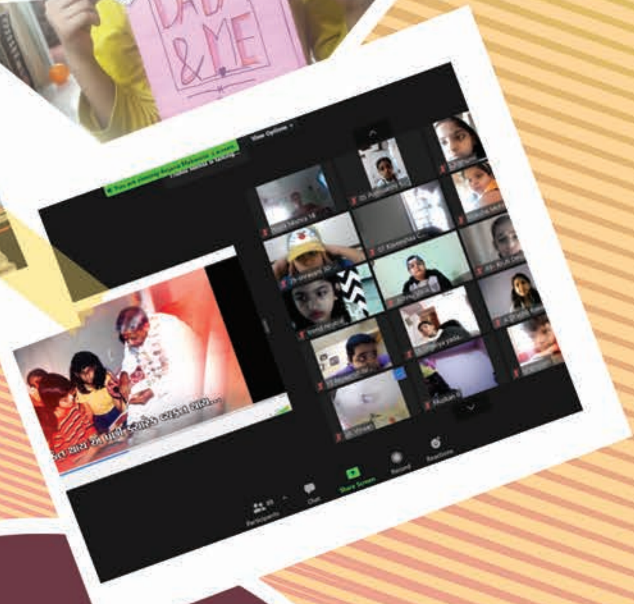

जवाब :

1. Nirumaa quiz ans :
१ – ब, २ – क, ३ – क, ४ – अ,
५ – क, ६ – ब, ७ – क, ८ – ब,

२. चलो खेलें
a. Crossword Puzzle

Akram Express
November 2020
Year : 8, Issue : 8
Conti. Issue No.: 93

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025